

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



% नाय्या

माथनवगरमं मथा(व्यातिर्व्याते। हिन्शवत्याद्भिन्नाद्भिन्नुष्ट् प्रदः सर्वादेवतास्वम् असार्यम् हताविविवागः। भे सास्र लो नम नताव समानातिव राजन्न कतेम खेर । हिन्सप जेन सा वितान्येनदेवाषातिभुवनानिपश्पन्।।स्राम्यार्थः/सवितास्त्रीन्येनस्त्रापाति।विद्वन्यः मुबनाति वर्षः। न्येयत्वमेषपन्यमिय् यामम् स्वष्ठस्य प्रस्पान्षमिये यामम् सम्यम् सम्यम् म उब्बाहिस वीद्यदर्म हुव-र्नमा माद्यम उष्य वा। प्रस्था वा न समोबे थाः। युनेः विभाग सिवता मार्थसमानः। उत्रयन्त्रिवतंत्रदेशमागळ्नः देगत्यमानात्रिकार्यनात्रिकार्यनात्रिकार्यनात्रिकार्य नमितिनेन प्रावेणगात्रिकाले प्राप्य मेलाम उभक्षेनगात्रिकाल स्वार्धन सम्बद्धान स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्व कार्णः। मः सिवतादेवम उष्यवापान्यवस्यापे देशप्रवित्रम् मिवर्तिना प्रप्यापे सिप्ति। प्रत्यहं समावातित समझहरां क र्म इति अत्रसाक्ष्योनिति व्यवहिताष्या इ व्यवहिता १ विष्

291974

चनः द्विति तिमंत्रसन्तर्यम् सम्मित्ययो त्युत्तस्त्यम् सम्बद्धार्थयं स्थान्य स

अते गाम

निस्मनरणाहर्नमानपदेनसहसंवध्यतेनेनस्नावर्नमानद्तिबार्णातमः तथानचेनाद्द्रस्वश्यतं स्वाद्दः संवध्याक्षात्रस्वातीति किणापदेनसहसंवधः। आक्षाणामं तथार्थाः मस्यनव महानव प्रतानव प्रत

स्थानी ।

11211

मोमें। निर्म बिस्तां ने तेजा न विस्तां तर ने हित त्यान् सरेन महीवादिव कर हित व्याप्ती न तिता कि कि कर हित के महीवादिव कर हित के स्वापंत्र के स्वापंत

श्रीत्यः

2月11日

-They fack High Right Alling this in the

11641

12)

मानिद्वी या में १ व में दे वो में १ सार्य सं प्यारंग मंग्रे निर्मण मिल ये उपयाय वर्षी ते वित्त वित्त वित्त में १ दिन यो वो दिन स्वारंग स्वया गण्या मिल ये न मिल वित्त रे ते न में १ दे में १ दे

,CREATED=22.10.20 10:39
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 10:41:02
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0004342
,Book Name=M-837-NAVGRAHMANTRA VYAKHYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF

[OrderDescription]